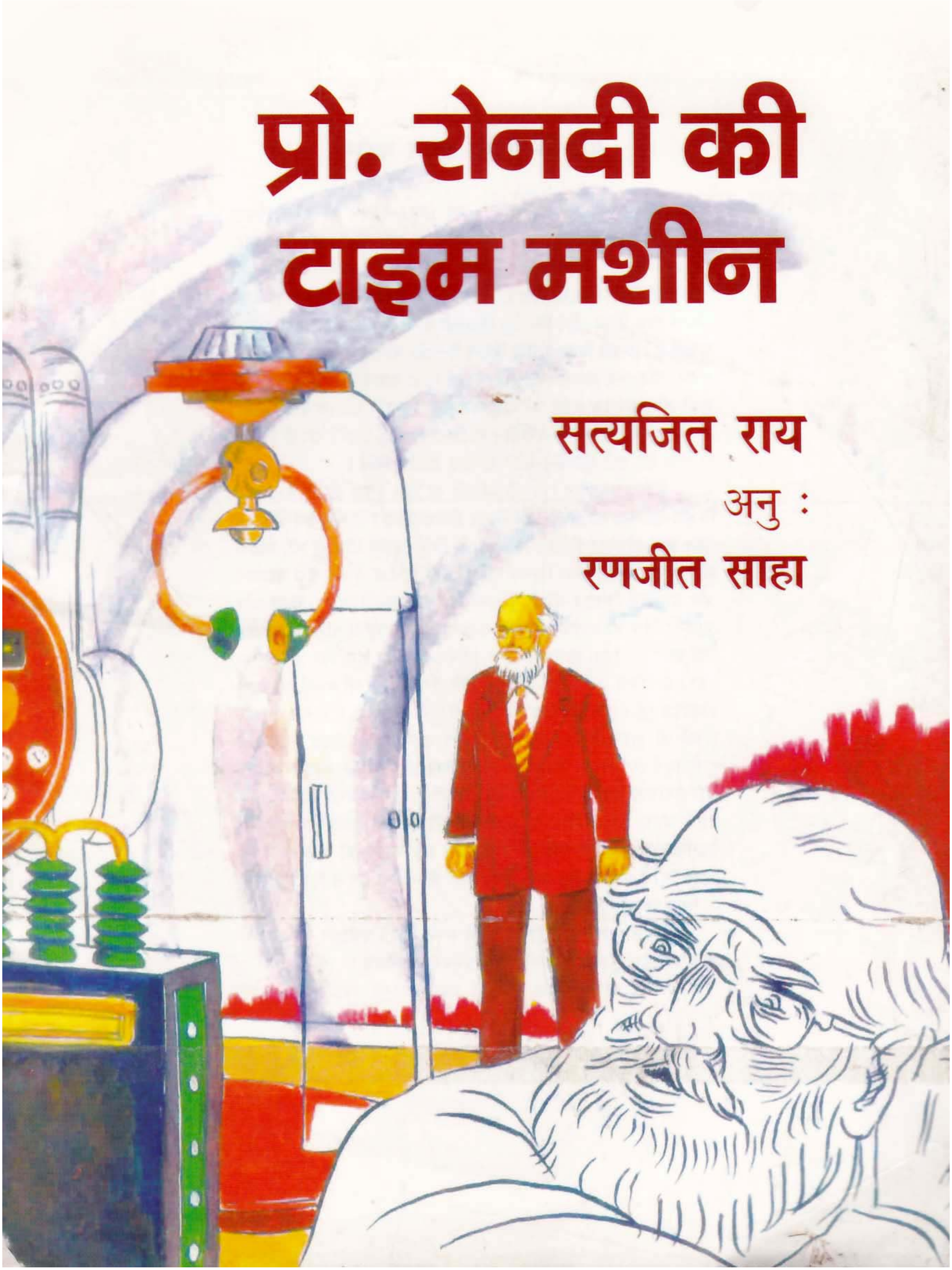
प्रो. रोनदी की टाइम मशीन

सत्यजित राय

अनु :

रणजीत साहा



प्रो. रोनदी की टाइम मशीन

भारत-रत्न श्री सत्यजित राय (जन्म 2 मई 1921–निधन 23 अप्रैल 1992) बहुत ही प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति थे। वे एक साथ फ़िल्मकार, चित्रकार, लेखक, निर्देशक, संगीतकार, सम्पादक और महान कलाकार थे। अपनी फ़िल्मों के लिए पटकथा-लेखन, सम्पादन, निर्देशन और संगीत संयोजन उन्होंने स्वयं किया और इस क्षेत्र में उनके योगदान का लोहा सारी दुनिया मानती है। उनकी विश्व प्रसिद्ध फ़िल्में हैं–पथेर पांचाली, अपराजित, अपुर संसार, चारूलता, जलसाघर, गोपी गायन बाघा बायन, सोनार केल्ला, घरे बाइरे और आगंतुक आदि, जो बाङ्ला में बनी। उन्होंने 'शंतरज के खिलाड़ी' और 'सद्‌गति' फ़िल्में भी बनायीं–जो हिन्दी में थीं। उन्होंने अपनी फिल्मों के लिए ढेर सारे पुरस्कार और सम्मान अर्जित किये।

लेकिन सत्यजित राय की प्रसिद्धि का एक दूसरा कारण है–उनका किशोर-साहित्य का श्रेष्ठ और सफल लेखक होना। उन्होंने इस दिशा में बहुत बड़ा योगदान किया। किशोरों के लिए उन्होंने तीस से भी अधिक कृतियों का लेखन किया। बच्चों की पत्रिका 'सन्देश' का दोबारा प्रकाशन और सम्पादन किया। अपनी पुस्तकों के लिए स्वयं रेखांकन किया और आवरण चित्र भी बनाये। मौलिक कल्पना और भारतीय परिवार, परिवेश और प्रसंग के रोचक चित्रण के लिए इन रचनाओं को खूब पढ़ा और सराहा गया। सत्यजित राय ने अपनी इन कहानियों पर फ़िल्में भी बनाईं, जो बहुत लोकप्रिय हुईं। सत्यजित राय की ऐसी ही चुनी रचनाओं में से एक है–**प्रो. रानेदी की टाइम मशीन**। इस डायरीनुमा उपन्यास में टाइम मशीन के चुनौतीपूर्ण आविष्कार, उपलब्धि और उनकी सीमाओं का बहुत ही रोचक और रोमांचक विवरण है। मनुष्य की विकास-यात्रा में वर्तमान के साथ-साथ उसके अतीत और भविष्य की रहस्यपूर्ण और अज्ञात कडियाँ शामिल हैं। वैज्ञानिक प्रयोगों और पात्रों के साथ-साथ इसे मनुष्य की कल्पना से भी जोड़ा गया है। **डॉ रणजीत साहा** ने इसे और भी रोचक ढंग से हिन्दी पाठकों के लिए प्रस्तुत किया है।

सत्यजित राय के ही रेखांकनों से समृद्ध वाणी प्रकाशन की ओर से अपने किशोर पाठकों के लिए एक अनुपम आयोजन।

एक दिलचस्प किताब ही नहीं, एक अभिनव उपहार भी।

प्रो. रोनदी की टाईम मशीन

(वैज्ञानिक-उपन्यास)

प्रो. रोनदी की टाईम मशीन

लेखक
सत्यजित राय
अनुवादक
डॉ. रणजीत साहा

7 नवम्बर

इस दुनिया में तीन अलग-अलग जगहों पर तीन वैज्ञानिक एक समय में एक ही मशीन के निर्माण में प्रयोग कर रहे हैं। ऐसा आमतौर पर नहीं होता। लेकिन अभी तो ऐसा ही है। इन तीन वैज्ञानिकों में, निश्चित रूप से मैं भी एक हूँ। और जिस मशीन पर काम हो रहा है, वह है टाइम मशीन।

मैं जब कॉलेज में विज्ञान की पढ़ाई पूरी कर रहा था तभी मैंने एच.जी.वेल्स की एक आश्चर्यजनक कहानी पढ़ी थी--'टाइम मशीन'। इसे पढ़ने के बाद, मेरे मन में इसी प्रकार का एक यंत्र तैयार करने की इच्छा जगी थी। इस इच्छा को मैंने कार्यरूप में परिणत भी किया था। लेकिन मेरा कार्य मुख्य रूप से एक सिद्धान्त की तरह ही विकसित हो रहा था। मेरी धारणा यह हो चली थी कि मेरे द्वारा विकसित सिद्धान्त की नींव काफी मज़बूत थी। इस बात की पुष्टि तभी हो गयी थी जब पिछली फरवरी में, स्पेन के मेड्रिड शहर में आयोजित वैज्ञानिकों के अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में मैंने अपना शोधपूर्ण आलेख पढ़ा था। वहाँ उपस्थित सभी लोगों ने मेरी भरपूर प्रशंसा की। लेकिन मेरे पास इतना धन नहीं था कि मैं अपने खर्चीले प्रयोग जारी रख पाता। रुपये की कमी के चलते इस बीच मेरा काम आगे बढ़ नहीं पाया।

इसी बीच, जर्मनी के कोलोन शहर के वैज्ञानिक प्रो. क्लाइव अपनी टाइम मशीन को अंतिम रूप दे रहे थे। उनका काम काफी आगे बढ़ गया था, इसकी सूचना मुझे अपने जर्मन मित्र मि. विलहेम क्रोले से मिल चुकी थी। प्रो. क्लाइव मेड्रिड वाले सम्मेलन में भी उपस्थित थे, जहाँ मैंने अपना पर्चा पढ़ा था। वहीं उनके साथ काफी देर तक बातचीत भी हुई थी। दुख इस बात का है कि यह सारा काम पूरा किये जाने के पहले ही किसी हत्यारे ने उनकी हत्या कर दी। उस हत्यारे का पता अब तक नहीं चल पाया है। इस घटना को बीते दो सप्ताह हो गये हैं। प्रो. क्लाइव पदार्थ विज्ञानी थे और काफी सम्पन्न थे। विज्ञान के अलावा उनके और भी कई शौक थे। इनमें-से एक था, कीमती और दुर्लभ कृतियों का संग्रह।

इस बात का अनुमान लगाया जा सकता है कि उनकी हत्या पेशेवर डाकुओं द्वारा की गयी थी।

क्योंकि प्रो. क्लाइव के काम करने वाले स्थान से, जो उनके घर का ही एक हिस्सा था, ऐसी तीन बेशकीमती कलाकृतियाँ ग़ायब हो गयी थीं। ठीक उसी हत्या के बाद। क्लाइव की मौत किसी भोथरे और भारी हथियार से सिर पर वार करने के कारण हुई थी। इस हथियार की तलाश में पुलिस ने दिन-रात एक कर दिया लेकिन हत्यारा अब तक पकड़ा नहीं जा सका था।

'टाइम मशीन' को तैयार करने वालों में से तीसरे थे इटली के मिलान शहर के प्रसिद्ध पदार्थ वैज्ञानिक प्रो. लुइज़ि रोनदी। इनकी मशीन तैयार हो चुकी थी और इसका परीक्षण किया जा चुका था। रोनदी मेड्रिड सम्मेलन में भाग नहीं ले पाये थे। वैसे मुझे यह मालूम नहीं था कि वे भी इस तरह के प्रयोग में डूबे हुए हैं। पिछले महीने प्रो. रोनदी ने मुझे एक व्यक्तिगत पत्र लिखा था, जिसमें यह सूचना दी गयी थी कि उनकी 'टाइम मशीन' बनकर तैयार हो गयी है। उन्होंने मुझे बड़े आदर के साथ मिलान आने का आग्रह किया था ताकि मैं उनके द्वारा निर्मित मशीन को देख सकूँ।

मुझे पहले से ही यह आशंका थी कि मैं इस तरह की प्रतियोगिता में पीछे रह जाऊँगा। लेकिन इस बीच रोनदी बाज़ी मार ले जायेंगे, इस बारे में मैं सचमुच कोई अनुमान नहीं लगा पाया था। रोनदी मिलान जैसे खर्चीले शहर में मेरे रहने-खाने-ठहरने का ही नहीं बल्कि हवाई जहाज़ से आने-जाने का सारा खर्च उठाने को तैयार थे। दरअसल रोनदी एक खानदानी रईस थे। वह एक वैज्ञानिक ही नहीं थे बल्कि काउंट लुइज़ि रोनदी के नाम से सारे शहर में सुपरिचित थे। इसलिए इस बात में कोई संदेह नहीं कि उनके पास अपार सम्पत्ति थी। मैं यह भी मान गया कि इतने बड़े आविष्कार की परिकल्पना रोनदी जैसा कोई सम्पन्न और समझदार वैज्ञानिक ही कर सकता है। दूसरी ओर रोनदी भी यह चाहते थे कि वह मुझ जैसे वैज्ञानिक को अपने प्रयोग एवं परीक्षण के बारे में बताये। उन्हें पता था कि मैं भी एक अर्से से इस काम में लगा हुआ था, भले ही मुझे इसमें अंतिम सफलता नहीं मिल पायी थी। यह सब वह अपने संतोष के लिए ही कर रहे थे और उन जैसे एक धनी वैज्ञानिक के लिए मुझ पर चालीस-पचास हज़ार रुपये खर्च करना कोई बड़ी बात नहीं थी।

यहाँ, मैं उन लोगों को जो इस टाइम मशीन के बारे में ज़्यादा कुछ नहीं जानते यह बता देना चाहता हूँ कि इस मशीन के ज़रिये वे अतीत और भविष्य की यात्रा कर सकते हैं। यह एक महान उपलब्धि थी। उदाहरण के लिए, वैज्ञानिकों एवं पुरातत्वविदों में अब भी यह मतभेद बना हुआ है कि मिस्र के पिरामिड का निर्माण किस प्रकार हुआ था। इस टाइम मशीन की सहायता से कोई भी आदमी पिछले पाँच हज़ार वर्षों की यात्रा कर खुद अपनी आँखों से यह देख सकता था कि इन पिरामिडों को किस प्रकार तैयार किया गया और सिर्फ पाँच हज़ार वर्ष ही क्यों पचहत्तर लाख वर्ष पूर्व की यात्रा कर वह यह भी देख सकता था कि डायनासोर जैसे भयंकर जीव का अस्तित्व कैसा था ? अतीत की यह यात्रा आदमी सशरीर कर पायेगा या उसकी स्मृति ही उसे वहाँ तक ले जायेगी--यह मैं मशीन को ठीक से देखे बिना अभी

निश्चित रूप से नहीं कह सकता। ऐसा भी हो सकता है कि आदमी जहाँ का तहाँ खड़ा हो और उसकी आँखों के सामने सिनेमा में दीख पड़ने वाले दृश्यों की तरह ही, अतीत का वह दृश्य उपस्थित हो जाये, जिसे वह देखना चाह रहा हो और चाहे जैसे भी हो, अगर आज का आदमी अपनी आँखों के सामने आदिम गुहावासी मनुष्यों को या फिर सिकन्दर या नेपोलियन के समय लड़ी गई लड़ाइयों का वही दृश्य देख सके और साथ ही यह भी कि आज से बीस हजार वर्ष बाद इस पृथ्वी का रूप कैसा होगा, लोग कैसे होंगे तो यह कोई छोटी-मोटी सफलता नहीं। यह तो एक अभूतपूर्व सफलता है।

मैंने यह तय कर लिया कि मैं प्रो. रोनदी का आमंत्रण स्वीकार करूँगा। इस मशीन के बारे में जानकर मैं वैसे ही विचलित हो उठा था और अब एक चंचल बालक की तरह इसे देखने को मचल उठा था। इस अवसर को किसी भी कीमत पर नहीं छोड़ा जा सकता था।

12 नवम्बर

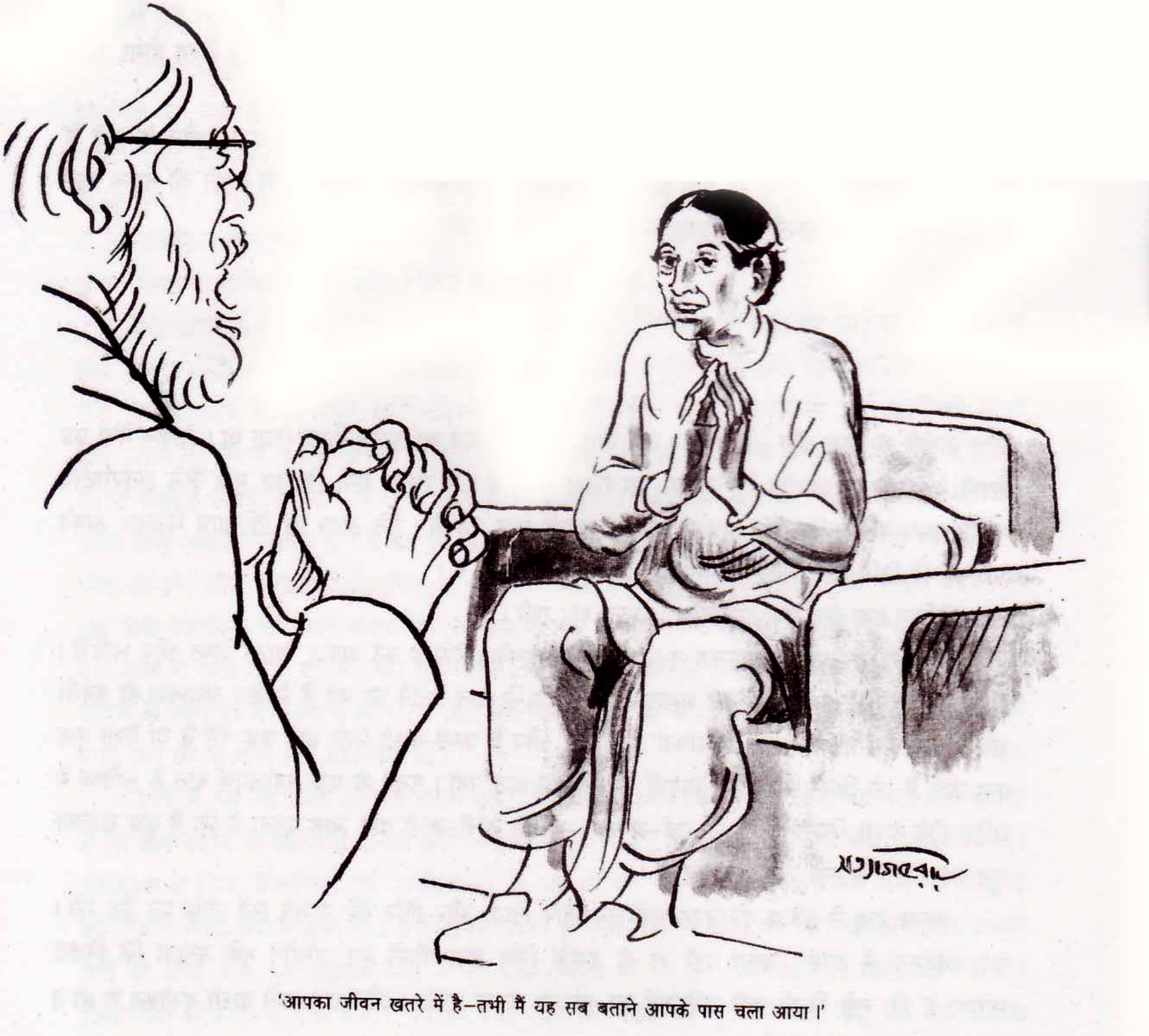
आज रोनदी का एक और पत्र मिला। इस बीच मैंने उनके पत्र का उत्तर लिख भेजा था। लेकिन मेरा पत्र मिलने के पहले ही उन्होंने यह दूसरा पत्र लिख भेजा है। मैं समझ गया कि वह मुझ जैसे अंतर्राष्ट्रीय ख्याति सम्पन्न वैज्ञानिक की प्रशंसा अर्जित करना चाह रहे थे। मैंने आज ही टेलिग्राम भेजकर अपने आगमन की तिथि और समय की निश्चित सूचना भिजवा दी है।

लेकिन इस बीच एक अजीब-सी घटना घट गयी।

आज एकदम सवेरे अचानक नकुल बाबू आ धमके। वैसे ये बड़े सहज, शांत, शिष्ट और भले हैं। ऊपरी तौर पर तो कुछ पता नहीं चलता कि कोई ख़ास बात बताने जा रहे हैं लेकिन अचानक ही इनकी आँखें किसी अलौकिक शक्ति से चमक उठती हैं और वे कभी-कभी ऐसी बात कह देते हैं या ऐसा कुछ कर जाते हैं जो किसी साधारण आदमी के बस की बात नहीं। इनमें से एक महत्वपूर्ण बात है भविष्य में घटित होने वाली किसी घटना का पूर्व-संकेत। मुझे तो कभी-कभी यही जान पड़ता है कि ये वृद्ध सज्जन खुद एक जीती जागती 'टाइम मशीन' हैं।

नकुल बाबू ने हमेशा की तरह मुझे नमस्कार किया और फिर मेरे सामने लगे सोफे पर बैठ गये। मेरी व्यस्तता में कोई बाधा पड़ी हो तो इसके लिए क्षमा माँगते हुए, उन्होंने मुझे बताया कि निकट भविष्य में ही, मुझे किसी बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ेगा। और इस आने वाली मुसीबत से ही वे मुझे सावधान करने आये हैं।

"मुसीबत--कैसी मुसीबत ?" मैंने उनसे पूछा।



'आपका जीवन खतरे में है–तभी मैं यह सब बताने आपके पास चला आया।'

उस भले आदमी के हाथ अब भी जुड़े हुए थे। उन्होंने बड़ी विनम्रता से कहा--"मैं ठीक-ठीक तो नहीं बता सकता महाशय, लेकिन मुझे ऐसा दीख पड़ा कि आप कहीं किसी घोर विपत्ति में फँसे हुए हैं और आपका जीवन खतरे में है।--तभी मैं यह सब बताने आपके पास चला आया।"

"इस विपदा से मुक्त हो पाऊँगा या नहीं ?"

"मैं कुछ कह नहीं सकता प्रोफेसर साहब।"

"अच्छा यह तो आप अवश्य ही बता पायेंगे कि यह घटना कब घटेगी ?" मेरी दृष्टि उनकी आँखों पर टिकी थी।

"हाँ, यह बता सकता हूँ' नकुल बाबू ने बड़े विश्वास के साथ कहा, "यह घटना 21 नवम्बर की रात को घटेगी। बस, इससे अधिक मैं आपको कुछ बता नहीं पा रहा हूँ।"

मैं 18 नवम्बर को मिलान पहुँचने वाला था। इसका मतलब यह हुआ कि जो कुछ भी घटित होगा वह मिलान में ही घटित होगा। जहाँ तक मेरा निजी अनुमान है कि रोनदी बड़ा नेक इन्सान है। मैंने उनके बारे में कभी कोई अप्रिय बात नहीं सुनी। मेरे मन में बार-बार यह सवाल उठता रहा तो क्या यह विपत्ति रोनदी की 'टाइम मशीन' के चलते आयेगी ?

अब जो भाग्य में लिखा है, वही तो होगा। और अगर सचमुच मौत ही लिखी हो तो इसके आने के पहले अतीत और भविष्य की यात्रा तो कर लूँ ! इतना भी कुछ कम नहीं।

18 नवम्बर, मिलान

मैं आज सुबह ही यहाँ पहुँच गया। तामझाम से भरा-पूरा और भीड़ भरा आधुनिक शहर। इटली का बहुत ही व्यस्त व्यावसायिक केन्द्र। प्रो. रोनदी शहर से कुछ दूर, एक खुले इलाके में, अपनी भव्य कोठी में रहते थे। वह अपनी लम्बी कार खुद चलाते हुए मुझे हवाई अड्डे से अपने निवास-स्थान तक ले आये थे। उसकी उम्र बावन-तिरपन के आसपास रही होगी लेकिन अपने तगड़े स्वास्थ्य और चिकने-चुपड़े व्यक्तित्व के कारण उनकी सही उम्र के बारे में कुछ कह पाना आसान न था। सिर के बाल काले थे। ठोढ़ी से चिपकी फ्रेंचकट दाढ़ी और मूँछें बड़ी घनी और काली।

हवाई अड्डे से आते हुए, रोनदी ने अपनी क्लेपाइप को होंठों से अलग करते हुए कहा, "मुझे दुख है कि मैं मेड्रिड वाले सेमिनार में उपस्थित नहीं हो पाया और आपका महत्वपूर्ण भाषण सुन नहीं पाया। लेकिन इटालियन जर्नल 'इल टेम्पो' में आपका जो पेपर छपा था, वह मैंने पढ़ा था। आप अपनी अब तक मशीन तैयार नहीं कर पाये, इसका मुझे बेहद अफसोस है।"

इसके बाद उन्होंने जो कुछ बताया, उसे सुनकर मैं हैरान हुए बिना नहीं रह सका।

रोनदी बताता रहा, "आपको यहाँ बुलाने के पीछे मेरा जो मकसद रहा, वह मैंने अपने पत्र में नहीं लिखा। वह मैं बता देना चाहता हूँ। मेरी मशीन काफी अच्छी तरह काम कर रही है और उसके सहारे अतीत या भविष्य--किसी भी ओर की--यात्रा की जा सकती है। किसी स्थान की भौगोलिक स्थिति के बारे में पहले से ही अच्छी तरह पता हो तो वहाँ सहज ही पहुँचा जा सकता है। यह कल की ही तो बात है। मैं कल ईसापूर्व विद्यमान यूनानी दार्शनिकों की वाद-विवाद सभा में जा पहुँचा। वहाँ पुरानी यूनानी भाषा में चल रहे तर्क-वितर्क को भी कुछ देर तक सुनता रहा। उस समय दोपहर का वक्त था। यह संभव नहीं हो पा रहा कि मैं वहाँ दिन के दस बजे किसी निर्धारित स्थान पर पहुँच जाऊं। मेरा प्रयास बार-बार असफल रहा है। इसकी वजह यह है कि अपनी मशीन में वहाँ का समय निश्चित या निर्धारित कर पाने में मुझे अब तक कोई सफलता नहीं मिल पायी है। इस बारे में मेरी सारी कोशिशें बेकार गई हैं। अब आप इस मामले में हमारी कोई सहायता कर सकें और हम सफल हो सके तो आपको हम अपनी कंपनी का भागीदार बना लेंगे।"

"कंपनी का भागीदार ?" मैं कुछ समझ नहीं पा रहा था।

"हाँ, कंपनी--" मीठी मुस्कान भरते हुए प्रो. रोनदी ने कहा, "टाइम ट्रेवल्स इनकोरपोरेटेड।" इस कंपनी को पैसे देकर कोई भी ग्राहक अपनी मर्जी के मुताबिक अतीत या भविष्य की यात्रा कर सकेगा। इस बारे मे मैंने न्यूयार्क के एक अखबार में एक विज्ञापन भी दे दिया था। पिछले तीन सप्ताह में, इस बारे में साढ़े तीन हजार पत्र प्राप्त हो चुके हैं और लोगों ने इसमें खासी दिलचस्पी जाहिर की है। वैसे जनवरी के पहले हम यह कंपनी चालू नहीं कर पायेंगे। लेकिन इतना तो तय है कि इस कारोबार में घाटे का कोई सवाल ही पैदा नहीं होता।"

"इस यात्रा के लिए कितनी रकम चुकानी पड़ेगी ?" मैंने पूछा।

"रकम की दर तो इस बात पर निर्भर करेगी कि कोई अतीत या भविष्य का सफर कितनी दूर तक और कितनी देर तक करना चाहता है। अतीत के मुकाबले भविष्य की दर कहीं ऊँची होगी। अतीत के किसी ऐतिहासिक युग में दस मिनट के लिए सफर की दर करीब दस हजार डालर होगी। अगर कोई प्रागैतिहासिक काल की यात्रा करना चाहेगा तो उसे दुगुनी रकम भरनी पड़ेगी। अगर वह दस मिनट से ज्यादा वक्त के लिए रुकना चाहे तो उसे फी मिनट की दर से एक हजार डालर और चुकाना होगा।"

"और भविष्य के लिए ?"

"इसके लिए अब तक कोई रेट तय नहीं कर पा रहा हूँ। आप चाहे निकट भविष्य की यात्रा करना चाहें या सुदूर भविष्य की--इसके लिए एक जैसी रकम चुकानी पड़ेगी--पचीस हजार डालर। फ्लैट

रेट-- ।"

मैं मन-ही-मन रोनदी की व्यावसायिक बुद्धि का प्रशसक हो उठा। अमेरिका के लाखों लाख रईसों की सनक की बदौलत यह कारोबार रातोंरात ज़ोर पकड़ लेगा, इसमें कोई सन्देह नहीं।

इस बातचीत के दौरान मैंने वह सवाल पूछ ही लिया जो मेरे मन में काफी देर से घुमड़ रहा था, "आपकी इस टाइम मशीन में दर्शक या ग्राहक की क्या भूमिका रहेगी ? अतीत या भविष्य को देखते हुए क्या वह वहाँ सशरीर उपस्थित रहेगा ?

"नहीं", रोनदी ने सिर हिलाते हुए कहा, "वह शरीर से तो वहाँ उपस्थित नहीं रहेगा। देखे जा रहे दृश्य में वह उपस्थित तो रहेगा लेकिन अदृश्य रहकर। उसे कोई देख नहीं पायेगा। जबकि वह सब कुछ देख पायेगा। वह इस धरती के किस हिस्से में जाना चाहेगा, उस स्थान विशेष के अक्षांश और देशान्तर की स्थिति को पहले से ही बटन दबाकर तय कर लिया जायेगा। अतीत और भविष्य में वह ठीक कितने वर्ष पहले या बाद--जाना चाहेगा, इसे भी पहले से ही तय कर लिया जायगा ! यह सब कुछ तय हो जाने पर सिर्फ़ दस सेकण्ड के अंदर ही, वह इच्छित स्थान और काल में पहुँच जायेगा। एक बार मनचाही जगह पर पहुँचते ही, बाकी सारे काम उसी तरह सरल हो जायेंगे, जैसे कि स्वप्न देखते हुए हो जाते हैं। उदाहरण के लिए अगर आप मेरी मशीन की सहायता से कैरो में उपस्थित होना चाहें और फिर वहाँ से गीज़ा के पिरामिड को देखना चाहें तो यह इच्छा चाहते ही पूरी हो सकती है। यानी यात्री की इच्छा से स्थान का परिवर्तन तो पलक झपकते ही पूरा हो जायेगा लेकिन काल विशेष में कोई फेरबदल नहीं हो पायेगा। वह अपरिवर्तित ही रहेगा।"

"इसका मतलब यह हुआ कि अतीत या भविष्य में एक बार पहुँच जाने पर कोई भी आदमी उस कालखण्ड में जहाँ चाहे वहाँ पहुँच सकता है ?"

"हाँ, लेकिन जैसा कि मैंने बताया," रोनदी ने याद दिलाते हुए कहा, "यात्री दिन, रात या शाम के किस हिस्से में वहाँ पहुँचेगा, उस पर मेरा कोई नियंत्रण नहीं हो पाया है अब तक। कल की ही बात है। एक दूसरे प्रयोग के दौरान ईसापूर्व तीस हजार वर्ष पहले अवस्थित अल्तेमिरा जाने की योजना के साथ मैंने बटन दबाया। मेरी इच्छा थी कि प्रस्तर युग की उन गुहाओं में आदि मानव द्वारा चित्रित किये जा रहे चित्रों को देख पाऊँगा। लेकिन मैं भरी अमावस वाली अंधेरी रात में जा फँसा कि आँखों से कुछ दीख ही नहीं पा रहा था। हारकर मैंने स्थान का परिवर्तन किया और फिर तत्कालीन मंगोलिया जा पहुँचा। उस समय वहाँ सुबह का वक्त था। लेकिन इस तरह के बदलाव से तो मुझे सफलता नहीं मिल सकती। इसलिए मैं चाहता हूँ कि आप मेरी मशीन की अच्छी तरह जाँच-पड़ताल कीजिए और अपने सुझाव दीजिए।'

"इसीलिए तो मैं यहाँ आया हूँ।" मैंने उन्हें अपनी तरफ़ से भरोसा दिलाते हुए कहा। "लेकिन

इसमें क्या-क्या सुधार जरूरी है। और यह सब कैसे किया जा सकता है, मैं पहले से ही कुछ नहीं कह सकता। आपने अपनी कंपनी में मुझे एक भागीदार के रूप में सम्मिलित करने का जो प्रस्ताव रखा है, इसके लिए मैं सचमुच आपका बड़ा आभारी हूँ। लेकिन इसकी कोई जरूरत नहीं है। मैं जो कुछ भी करूँगा अगर उससे आपको मेरी वैज्ञानिक प्रतिभा या क्षमता का पता चले तो मैं अपने को बहुत ही भाग्यशाली समझूँगा।"

मेरी बातों को सुनकर रोनदी ने मेरी ओर बड़ी हैरानी से देखा। मैं यह समझ गया कि वह मुझे इस तरह क्यों देख रहे हैं। इतने लाभदायक प्रस्ताव का हाथ आया अवसर छोड़ देने का मेरा यह निर्णय उनके लिए अवश्य ही नया अनुभव था।

मैं जब रोनदी की आलीशान कोठी पर पहुँचा, उस समय दोपहर के बारह बजे थे। रोनदी ने स्वयं मेरा कमरा दिखा दिया। बड़ा शानदार इंतजाम था। कहीं कोई कोर क़सर नहीं थी।

मेरे यह पूछने पर कि इतनी लम्बी-चौड़ी कोठी में क्या वे अकेले ही रहते हैं तो रोनदी ने बताया कि उनकी एक दूसरी कोठी रोम शहर में है वह भी आधुनिक सुख-सुविधा से सम्पन्न है। उनकी पत्नी और बेटी वहीं रहती हैं। हर दूसरे महीने, लगभग एक सप्ताह के लिए वे रोम-प्रवास पर जाते हैं और उनके साथ ही समय बिताते हैं।

"दरअसल इतनी बड़ी कोठी रहने की वजह से ही मुझे सारी सुविधा मिल गयी है।" रोनदी बताने लगे, "मेरी तमाम मशीनें, प्रयोगशालाएँ वगैरह यहीं हैं और मेरा सहायक एनरिको भी मेरे साथ ही रहता है। इसके अलावा, इन दिनों दूरदराज से कई वैज्ञानिक यहाँ आते रहे हैं और उन सबों ने यह स्वीकार किया है कि मैंने एक ऐसा अनूठा काम पूरा कर लिया है, जो अब तक किसी के बूते का नहीं था।" रोनदी की बात में खुशी और गर्व का भाव था और यह स्वाभाविक ही था।

यह तय हुआ कि मैं स्नान और भोजन आदि के उपरान्त वह मशीन देखूँगा। फिर इस बात पर विचार करूँगा कि रोनदी के अनुरोध के अनुसार काम पूरा करना कहाँ तक संभव है। मैंने जिस टाइम मशीन की परिकल्पना की थी, उसमें किसी ख़ास समय में अतीत और भविष्य दोनों में पहुँचा जा सकता था। इस परिकल्पना के अनुसार अगर रोनदी की मशीन का कोई तालमेल न हो तो वह आगे कितनी दूर तक सफल होगा, इस बारे में अभी कुछ कहा नहीं जा सकता था।

अभी तो मैं यह डायरी लिखना बंद कर नहाने-धोने जा रहा हूँ। दिन के ठीक एक बजे लंच लेना है, रोनदी ने यह पहले ही बता दिया था।

18 नवम्बर, शाम के चार बजे

इस समय मेरे मन की जो स्थिति है, मैं उसका वर्णन नहीं कर सकता। रोनदी की मशीन के सहारे मैं अभी थोड़ी देर पहले सम्राट अशोक के राज्यकाल में पहुँच गया था। मैंने उनकी राजधानी से कुछ दूर पर स्थित एक पशु चिकित्सालय का परिदर्शन किया। वह सारा-का- सारा दृश्य पूरी तरह स्पष्ट नहीं था। किसी मच्छरदानी के अंदर से जैसे बाहर का दृश्य दीख पड़ता है, कुछ वैसा ही झीना-सा आवरण था। लेकिन इससे क्या ? मन की उत्तेजना में कोई बाधा नहीं पड़ी थी और देह बार-बार सिहर उठती थी। सम्राट अशोक ने क़ानून बनाकर अपने राज्य में पशु हत्या बंद करवा दी थी। साथ ही, बीमार और बूढ़े पशुओं की चिकित्सा और देखरेख के लिए जगह-जगह अस्पताल भी बनवा दिया था, ऐसा मैंने इतिहास की किताबों में पढ़ा था। लेकिन मैं इनमें से किसी एक पशु-चिकित्सालय को खुद अपनी आँखों से देख पाऊँगा, ऐसा मैंने सपने में भी कभी नहीं सोचा था। मैंने देखा, एक बहुत बड़ी छावनी-सी है और उसमें एक साथ हज़ारों-हज़ार गाय, घोड़े, बकरे और कुत्ते अलग-अलग रखे गये हैं और उनकी समुचित चिकित्सा हो रही है। वहाँ तैनात चिकित्सकों और दूसरे लोगों की बातचीत भी मैं सुन पा रहा था लेकिन यह आवाज़ बहुत साफ नहीं थी। कुछ वैसी ही थी जैसा कि कान में रुई घुसेड़ लेने के बाद सुन पड़ती है। हो सकता है, यह मशीन का दोष हो या फिर इससे अधिक साफ देख पाना या सुन, पाना संभव ही न था। इस बारे में तभी जाना जा सकेगा जब मैं इसका पूरी तरह परीक्षण कर देखूँगा। आज तो मैं एक यात्री की भूमिका में था। कल इसके एक-एक पुर्जे की पड़ताल करनी है। लेकिन महत्वपूर्ण बात यह थी कि यह मशीन मेरी अपनी परिकल्पना के बहुत निकट थी और मुझे ऐसा लगने लगा था कि मैं रोनदी के अनुरोध की रक्षा कर पाऊँगा।

यह मशीन एक कमरे में लगायी गयी थी। कमरे का आकार बहुत बड़ा न था लेकिन छोटा भी नहीं था। इसके फर्श पर दो फुट ऊँचा मंच बना था और इसके ठीक बीचोबीच स्थित मशीन के एक ओर पारदर्शी प्लास्टिक का छोटा-सा कक्ष बना हुआ था, जिसमें एक ओर दरवाजा लगा हुआ था। यात्री को इसी कक्ष में प्रवेश करना पड़ता था। यात्री अतीत या भविष्य में कितने आगे या पीछे यात्रा करना चाहता है, यह बता देने पर रोनदी आवश्यकता के अनुरूप बटन दबा देता और इस तरह यात्रा शुरू हो जाती। इस कक्ष के अंदर से भी, यंत्र पर नियंत्रण रखा जा सकता था लेकिन मैंने पाया कि रोनदी यात्री पर यह दायित्व नहीं छोड़ते थे बल्कि यंत्र का सारा संचालन और उस पर नियंत्रण स्वयं अपने अधीन रखना पसंद करते थे। इस बात की पुष्टि मेरे अपने अनुभव से भी हुई। वैसे अतीत से भविष्य या भविष्य से अतीत की ओर की यात्रा निर्धारित समय या अवधि के बाद अपने आप हो जाती थी और यह एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि थी। अगर यात्री दस मिनट के लिए यात्रा पर जाता तो उसे इस पूरे समय के लिए

प्रस्तावित स्थान की यात्रा करनी पड़ती। अगर वह बीच में ही इस यात्रा को अधूरा छोड़कर वापस आना चाहता तो कक्ष के बाहर बैठा नियंत्रक (अभी तो स्वयं प्रो. रोनदी) बटन दबाकर उसे वापस लौटा ले आता।

इस प्लास्टिक-कक्ष में प्रवेश करने के पहले ही, यात्री को यह बता दिया जाता कि उसे कौन-कौन बटन दबाना है। पहला बटन दबाने के बाद ही यात्रा की प्रक्रिया शुरू हो जाती। वह अपने शरीर में बिजली का हल्का-सा झटका महसूस करता। इसके साथ ही उसकी आँखों के सामने एक काला-सा पर्दा झूल जाता। कुछेक सेकेण्ड के बाद ही, इस काले पर्दे पर धीरे-धीरे कोई दृश्य उभरने लगता। धीरे-धीरे यह दृश्य और अधिक स्पष्ट होता हुआ जीवंत हो उठता। मैंने देखा कि मैं एक लम्बे-चौड़े राजपथ के सामने खड़ा हूँ। यह दोपहर का समय था। राजपथ के दोनों और खड़े प्रस्तर-स्तम्भों पर रात्रि में मशाल जलाये जाने की व्यवस्था थी। इस पथ पर बीच-बीच में पैदल यात्री, बैलगाड़ी और घोड़े द्वारा खींचे जाने वाले रथ आ-जा रहे थे। कुल मिलाकर यह बड़ा ही दिलचस्प और हैरानी में डाल देने वाला दृश्य था, वर्तमान के सामने जीता-जागता अतीत। मेरे मन में अशोककालीन पशु-चिकित्सालय के सम्बन्ध में पहले से ही बड़ा कौतूहल था इसीलिए मैंने मन-ही-मन में इस देखने की इच्छा प्रकट की और दूसरे ही क्षण सारा दृश्य बदल गया। मैंने पाया कि मैं एक पशु-चिकित्सालय में उपस्थित हूँ।

पता नहीं, सारा समय कैसे कट गया। ठीक दस मिनट बाद प्रो. रोनदी ने बटन दबाया और मेरी देह में हल्की-सी झुरझुरी दौड़ गयी। यह बिजली का हल्का-सा झटका ही था। इसके साथ ही, मेरी चेतना इस प्लास्टिक-कक्ष में लौट आयी। रोनदी ने मेरे अनुभव के बारे में जानने को उत्सुक थे। मैंने मुक्तकंठ से उनकी टाइम मशीन की प्रशंसा की और उनके प्रस्ताव को अपना समर्थन देने का वादा किया।

आज की ही सुबह, प्रो. रोनदी के सहयोगी एनरिको से भी परिचय हुआ। उसकी उम्र कोई तीस-एक साल की होगी। आकर्षक व्यक्तित्व और चेहरे पर तेज। उसकी आँखों में मुझे एक अजीब-सी बेचैनी दीख पड़ी, जिसका कारण मै समझ नहीं पाया। इतनी छोटी-सी मुलाकात में किसी अपरिचित आदमी को अच्छी तरह पहचान पाना बहुत आसान नहीं। उसकी बातों से इतना जरूर मालूम हुआ कि उसे भारतवर्ष के बारे में बहुत अच्छी जानकारी थी। उसने यह बताया कि उसके दादा भारत-विद्या के बड़े अनुरागी थे। वे एक प्रसिद्ध इण्डोलॉजिस्ट थे और संस्कृत जानते थे।

मुझे उसके प्रति कौतूहल-सा हुआ और मैंने उससे पूछा, "तुम्हारा पदनाम (पदवी) क्या है ?"

"पेत्री", उसने संकोच के साथ बताया।

"तुम रिकार्दो पेत्री के पोते तो नहीं ?"

एनरिको ने सिर हिलाकर हामी भरी। मेरा अनुमान सही था। भारतवर्ष पर रिकार्दो द्वारा लिखी

गयी कुछ पुस्तकों को मैंने पढ़ रखा था। मुझे ऐसा लगा कि एनरिकों के रूप में मुझे कोई आत्मीय मिल गया हो। आगे जब भी सुयोग मिलेगा, उससे बातें होती रहेंगी।

कल से ही मै उस मशीन की सारी प्रक्रिया का अध्ययन करूँगा। रोनदी ने यह बता दिया है कि अगर और भी लोगों की जरूरत पड़ी तो उनका भी इंतजाम हो जायेगा।

19 नवम्बर

भारतीय वैज्ञानिकों की महान परम्परा में, मैंने आज वह कार्य पूरा कर दिखाया है, जिससे हमारे देश का गौरव बढ़ा है। एनरिको की सहायता से सिर्फ तीन घंटे में,मैंने एक छोटा-सा हिस्सा जोड़कर रोनदी की मनोकामना पूरी कर दी है।

नेबूकाडेनजर की बेबिलोनिया में आज से लगभग ढाई हजार साल पहले पेट्रोलियम का प्रयोग कर रोशनी की जाती थी। इसके चलते रात हो जाने पर भी उस नगर का वैभव झिलमिलाता रहता था। टाइम मशीन में अब इस एक नये बटन को दबाकर, मैं रात के ठीक साढ़े आठ बजे, नगर के इस दृश्य को अपनी आँखों से देख आया था। यह एक ऐसा आश्चर्य मिश्रित अनुभव था कि उसे लिखकर नहीं बताया जा सकता। इस प्रकार अब अतीत का इतिहास लिखते हुए, इतिहासकारों को कल्पना या अनुमान का सहारा लेने की जरूरत नहीं पड़ेगी, अब वे सब कुछ अपनी आँखों से देखकर किताबें लिखेंगे। वैसे अभी यह नहीं कहा जा सकता कि वे रोनदी द्वारा प्रस्तावित रकम चुका पायेंगे भी या नहीं। शायद नहीं। जब रोनदी से मैंने इस बारे में जानना चाहा तो उनकी बातों से लगा कि वह इन इतिहासकारों के बारे में गंभीरता से नहीं सोच पा रहे। वह यही चाह रहे हैं कि इस यंत्र की सहायता से वह ज़्यादा से ज्यादा पैसा बटोर सके। उनके इस कारोबारी रवैये से मेरा कुछ लेना-देना न था। बल्कि मैं उसके इस रवैये से एकदम सहमत नहीं था। इस खुशमिज़ाज आदमी की धन दौलत के प्रति इतनी अधिक ललक देखकर मुझे कम हैरानी नहीं हुई।

लेकिन रुपये-पैसे कमाने वाली लालची वृत्ति की बात छोड़ दें तो इसमें कोई संदेह नहीं कि वह एक प्रतिभाशाली वैज्ञानिक और आविष्कर्ता थे। और इसमें भी कोई सन्देह नहीं कि अपने अद्‌भुत आविष्कार के कारण वह सारे विज्ञान-जगत् में अमर हो जायेंगे और उनकी कीर्ति दिनोंदिन बढ़ती चली जायेगी।

आज ही, रोनदी ने मुझे यहाँ कुछ और दिन रुक जाने को कहा। उन्होंने यह बताया कि 'टाइम ट्रेवल्स' के बारे में और भी आवश्यक जानकारी इकट्ठी कर ली जाये, बाद में वापसी के बारे में सोचा

जायेगा। मुझे इसमें कोई आपत्ति नहीं थी। 'टाइम ट्रैवल्स' अपने आप में इतने आनन्ददायक और रोमांचक थे कि कोई उन्हें छोड़े भी तो कैसे ? और देखने योग्य स्थानों का कोई अंत तो था ही नहीं। मैं एक बार भविष्य की ओर छलाँग लगाना चाहता था। मेरे मन में आने वाले समय की न जाने कैसी-कैसी कल्पना थी। उस कल्पना के साथ आगामी काल के व्यक्ति और समाज का निश्चित रूप का कोई तालमेल होगा या नहीं, यह जानने की बड़ी इच्छा थी। मनुष्य क्या धीरे-धीरे मशीन का दास बनकर रह जायेगा ? मेरा अपना विश्वास तो यही कहता है।

19 नवम्बर, रात ग्यारह बजे

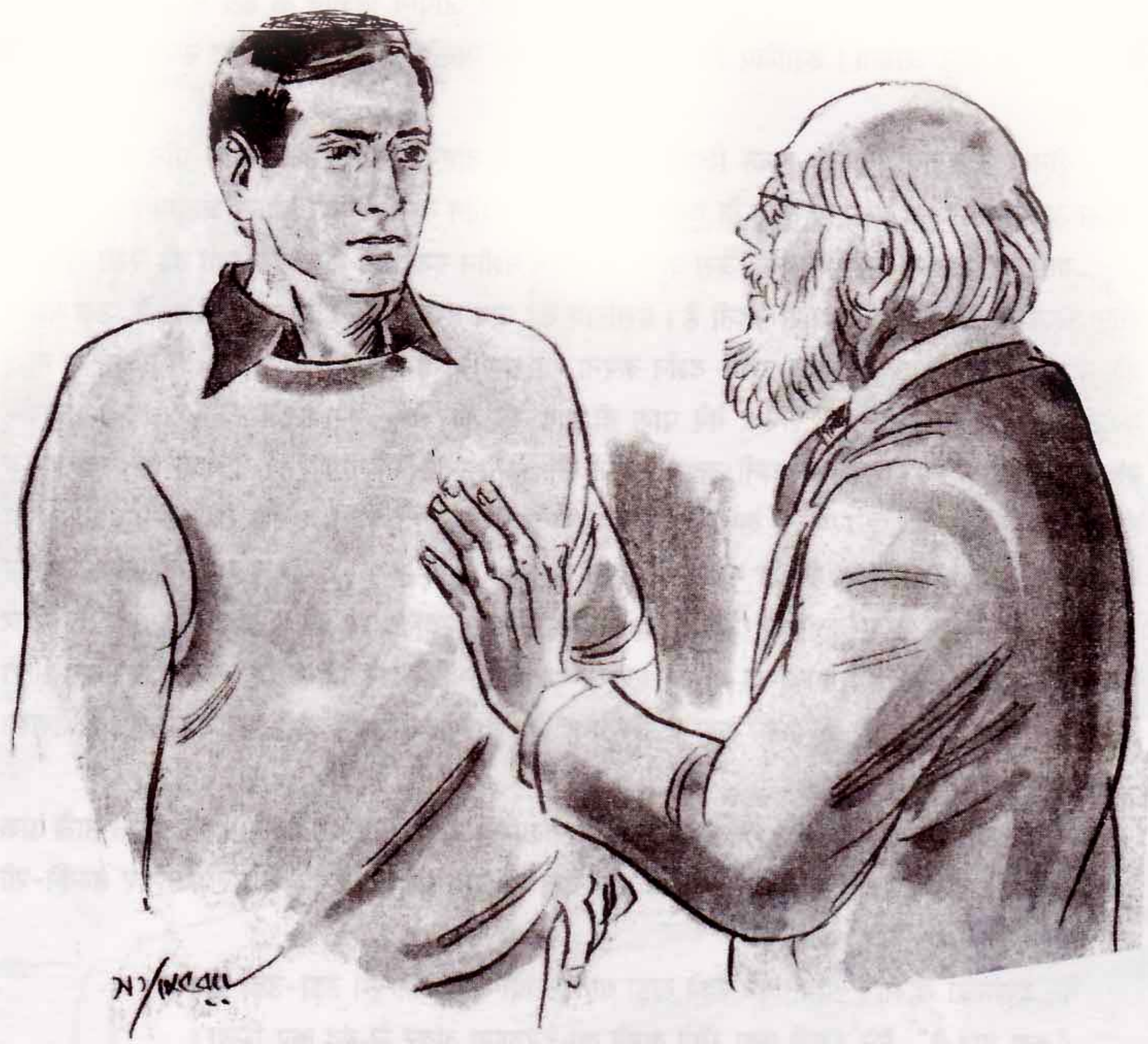
आज शाम, जर्मनी के म्यूनिख शहर से मेरे मित्र विलहेम क्रोले ने मुझसे फोन पर बातें की थीं। उसे मैंने एक पत्र लिखा था और यह बताया था कि मैं मिलान आया हुआ हूँ और प्रो. रोनदी के यहाँ ठहरा हूँ। क्रोले ने मज़ाक करते हुए कहा, "टाइम मशीन के आविष्कार से जुड़े एक वैज्ञानिक की हत्या हो चुकी है। जरा चौकस रहना। कहीं तुम लोगों के साथ ऐसा-वैसा कुछ न हो जाये।" क्रोले ने यह भी बताया कि क्लाइव की रहस्यपूर्ण हत्या को कोई सुराग़ हाथ नहीं लगा है। मशीन निर्माण के मामले में वह मुझसे काफी आगे निकल गया था और अगर वह एक महीना और जीवित रहता तो उसकी टाइम मशीन अब तक जरूर बन गयी होती।

थोड़ी देर पहले ही मैंने डिनर लिया था। तब से तबीयत भारी-भारी-सी लग रही है। सिर में दर्द है और हल्का-हल्का-सा चक्कर भी आ रहा है। कुछ करने को जी नहीं चाहता। मेरे पास एक सर्वदुखनिवारक टिकिया रहती है, सारे रोगों की रामबाण दवा। लेकिन मुझे उसे लेने की कभी जरुरत नहीं पड़ी थी। लेकिन आज एक टिकिया, सोने के पहले, जरूर ले लूँगा। परदेस आकर बीमार पड़ जाना कोई अच्छी बात नहीं।

20 नवम्बर, दोपहर 11 बजे

आज एक अद्भुत घटना घटी। मुझे ऐसा लगने लगा कि नकुल बाबू की आशंका कहीं सच न हो जाये। वैसे मैं यह बताना चाहता हूँ कि कल रात ली गयी दवा से आज मेरी तबीयत एकदम ठीक ठाक है। मेरे मन की चिन्ता और देह की थकान मिट गयी है। लेकिन सब कुछ मजे में चलता रहे इसलिए आज की

सुबह मैंने काफी और टोस्ट के सिवा और कुछ नहीं लिया। रोनदी को भी मेरी तबीयत खराब होने के बारे में पता चल गया था। मैंने उन्हें सब कुछ बता दिया। साथ ही, यह भी कि मुझे खुद अपनी बनायी हुई



'जरा चौकस रहना, कहीं तुम लोगों के साथ ऐसा-वैसा न हो जाये।'

दवा का, जीवन में पहली बार, सेवन करना पड़ा है। रोनदी ने सारी बातों को ध्यान से सुना। अचानक एनरिको पर नज़र पड़ते ही उनके माथे पर शिकनें पड़ गयीं और उनकी दृष्टि कहीं दूर खो गयी जैसे !

"आप किस शताब्दी में जाना चाहेंगे ?" रोनदी ने मुझसे पूछा। मैंने कहा, "आज से ठीक हज़ार साल बाद, आने वाले समय में।"

"और किस देश में।"

"जापान में।" मेरा विश्वास था कि आने वाले वर्षों में जापान विज्ञान के क्षेत्र में, विश्व के तमाम देशों को पीछे छोड़ जायेगा। इसलिए विज्ञान की प्रगति का सबसे उन्नत और स्पष्ट रूप वहीं देखा जा सकेगा।

रोनदी ने बताया कि वह सुबह किसी ज़रूरी काम से बाहर जायेंगे लेकिन चार-पाँच घंटे बाद ही वापस आ जायेंगे। तय हुआ कि दिन के ग्यारह बजे टाइम मशीन वाला कमरा खोला जायगा।

यहाँ, यह बताना ज़रूरी है कि जिस कमरे में टाइम मशीन रखी हुई है, उसे हमेशा बंद रखा जाता है और उसकी चाबी रोनदी के पास रहती है। इसलिए वह जब तक कमरे का ताला नहीं खोलें, उस मशीन को चालू करना तो दूर की बात उसके दर्शन करना भी असंभव है। कल भी जब तक मैं मशीन के साथ परीक्षण या यात्रा करता रहा, रोनदी मेरे पास ही खड़े रहे और वही मेरी यात्रा का बटन दबा-दबाकर संचालन करते रहे। रोनदी ने अपनी टाइम मशीन को अपने सीने से लगा रखा था, जो कि स्वाभाविक ही था। लेकिन उनके आचरण से कभी-कभी यह सन्देह अवश्य ही होता था कि वह ज़रूरत से ज्यादा चौकस हैं। चोर-डाकुओं के डर से मशीन की रक्षा के लिए जिस घर में अपने आप बजने वाला बर्गलर अलार्म पहले से ही लगा हुआ था। कोठी के सामने वाला दरवाज़ा भी हमेशा बंद ही रहता है केवल खिड़कियाँ खुली रहती हैं। कोठी के सामने एक बन्दूक़धारी चौकीदार पहरा देता रहता है। यह सारा प्रबन्ध तो पहले से ही है, इसलिए मुझसे उसे क्या भय हो सकता था! कहीं एनरिको पर तो उसका सन्देह नहीं ?

रोनदी के चले जाने के बाद, मैं उनके निजी पुस्तकालय से दो-तीन विज्ञान-पत्रिकाओं के ताज़े अंक अपने कमरे में उठा लाया। उन्हें उलट-पलट कर देख ही रहा था कि कमरे के दरवाज़े पर हल्की-सी दस्तक सुन पड़ी।

मैंने दरवाज़ा खोला। सामने एनरिको खड़ा था। उसके चेहरे का रंग उड़ा-उड़ा था।

"क्या बात है", मैंने उससे पूछा और कमरे का दरवाज़ा अंदर से बंद कर लिया।

"भारी मुसीबत टूटने वाली है।"

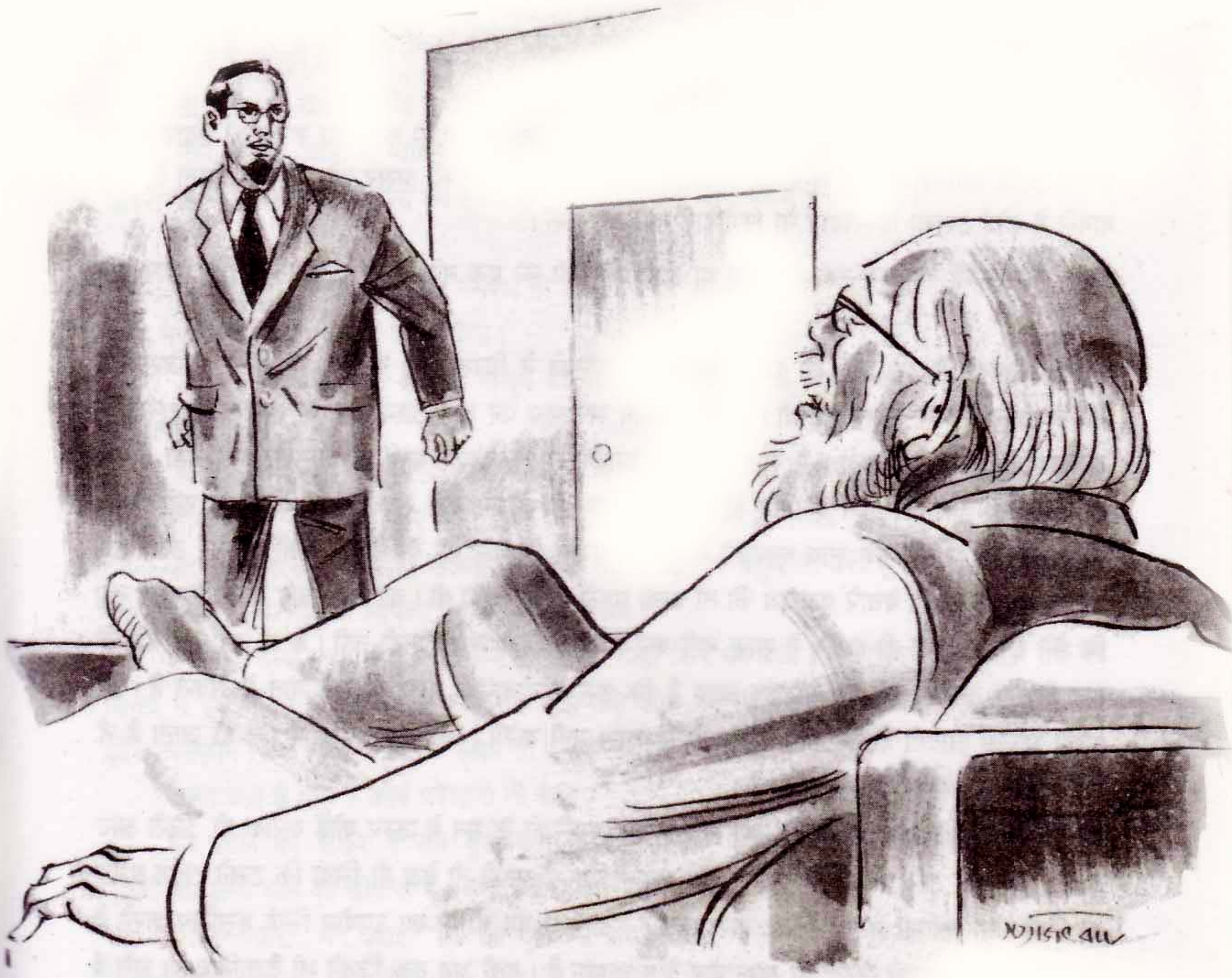
"किसके सिर ?"

"आपके--और इसलिए आपको सावधान करने आया हूँ--हालाँकि मालूम होने पर यह मुसीबत

मेरे सिर भी आ पड़ेगी।"

"आखिर यह कौन-सी मुसीबत है ?"

"मुसीबत ही नहीं, जान पर खतरा है।"



'चौबीस घंटे के अन्दर ही आप पर बहुत बड़ा खतरा आने वाला है।'

"मैं समझा नहीं कुछ !"

"मुझे पूरा यक़ीन है कि कल रात आपके फल के रस में जानलेवा ज़हर मिला दिया गया था।"

मुझे काटो तो खून नहीं। मैंने पूछा, "तुम यह बात कैसे कह सकते हो ?"

"इसकी एक वजह है। कल रात आपके खाने में जो-जो चीजें थीं, वे हमें भी खाने को मिलीं। लेकिन फलों का रस सिर्फ आपको ही दिया गया था। इसीलिए आपकी तबीयत इस तरह अचानक बिगड़ गयी।"

"लेकिन मुझे इस तरह जहर देकर मारने का षड्यंत्र क्यों किया जा रहा है ?" मैं विचलित हो उठा था।

"मुझे ऐसा लगता है कि टाइम मशीन के मामले में रोनदी किसी से मुक़ाबला करने को तैयार नहीं। इससे उसके मान-सम्मान में कमी आ जायेगी। उसके कारोबार पर भी असर पड़ेगा। वह चाहता है, इस मामले में कोई उसका हिस्सेदार या भागीदार नहीं बन सके।"

मैं अब भी सामान्य नहीं हो पाया था और एनरिको को एक नये रूप में पढ़ने की कोशिश कर रहा था।

"आपको मैं उस दिन की घटना बताऊँ", एनरिको ने विस्तार से बताना शुरू किया, "जिस दिन टाइम मशीन बनकर तैयार हुई थी। रोनदी इसकी सफलता पर बड़ा उछल रहा था और इसी धुनकी में वह काफी शराब चढ़ा गया। मैं साथ ही था। उसकी बहकी-बहकी बातों को सुनकर मुझे बड़ी हैरानी हुई। वह नशे की हालत में क्लाइव और आपका नाम ले-लेकर बड़ी भद्दी गालियाँ बकता रहा। आप दोनों, इस मैदान में उसके साथ मुक़ाबले में ऐसे ही प्रयोग जो कर रहे थे। मैं बता नहीं सकता, उसने उस दिन क्या कुछ कहा। बेचारे क्लाइव की तो हत्या पहले ही हो चुकी थी। वह बार-बार यही दोहराता रहा कि मैंने इसे भी एक ही झटके में साफ़ नहीं कर दिया तो मेरा नाम रोनदी नहीं। है तो यह सब नशे की बात लेकिन वह शुरू से यह मानकर चला है कि इस कारोबार में आप ही उसे मात दे सकते हैं। वह इतना घटिया आदमी है कि आप सुनेंगे तो विश्वास नहीं करेंगे। वह जब शराब में धुत हो जाता है तो उसका असली चेहरा दीखने लगता है।"

मैं अब पूरी तरह सतर्क हो गया था। लेकिन एनरिको के मन में ज़रूर कोई कसक थी, जिसे आज व्यक्त करने का उसे अवसर मिला था। वह बताता रहा, "आपने तो देख ही लिया कि उसने टाइम मशीन को किस तरह अपनी मुट्ठी में बंद कर रखा है। आपको वह मशीन का उपयोग सिर्फ इसलिए करने दे रहा है कि वह आपको जल्द-ही खत्म कर देना चाहता है। यहाँ अब तक जितने भी वैज्ञानिक आ चुके है उनमें-से किसी को भी उसने एक बार से ज्यादा इस टाइम मशीन का इस्तेमाल करने नहीं दिया। मैं तो उसका सहयोगी रहा हूँ और पिछले तीन वर्षों से बराबर उनके काम में हिस्सा बँटाता रहा हूँ। लेकिन

इस मशीन के तैयार हो जाने के बाद, उसने एक बार भी, मुझे इसे हाथ लगाने तक नहीं दिया।"

मैं हैरान था। मैंने पूछा, "आपने अब तक टाइम मशीन से कभी यात्रा की या नहीं ?"

"हाँ, कई बार यात्रा पर जा चुका हूँ," एनरिको ने स्वीकार किया, "लेकिन प्रोफेसर को इस बारे में नहीं मालूम। पिछले महीने वह रोम गया था। उस समय मैंने लोहे के तार की सहायता से किसी चोर की तरह इस मशीन वाले कमरे का ताला खोला था। और अब भी, लगभग हर रात को मैं टाइम मशीन के द्वारा उस यात्रा का आनंद उठाता हूँ। मुझे तो इस नशे की बुरी लत-सी लग गयी है। जब प्रोफ़ेसर को इस बारे में मालूम होगा तो पता नहीं, मेरी क्या दुर्गत होगी।"

"तो आप यह चाहते हैं कि मैं यहाँ से जितनी जल्द हो, चला जाऊँ ?"

"नहीं, रहना चाहें तो रहिए। मगर ऐसी कोई भी चीज़ मत खाइये, जिसे हम नहीं छू रहे। जहरीली चीज़ें खिलाकर, किसी की हत्या कर डालना उसके लिए बच्चों का खेल है।"

मुझे नकुल बाबू की भविष्यवाणी का स्मरण हो आया। फिर भी मैंने कहा, "मेरे पास जो दवा है, उससे जहर मेरा कोई नुक़सान नहीं कर पायेगा।"

"लेकिन उन्हें जब इस बारे में मालूम हो जायेगा तो यह तय है कि ही वह कोई दूसरा तरीका अपनायेगा।"

"मैं उसे दूसरा तरीक़ा अपनाने का मौका ही न दूँगा। मैं उसे यह बताने की कोशिश करूँगा कि मेरी दवाई ठीक-ठीक काम नहीं कर रही और मैं उसकी ज़हरीली चाल का शिकार होता जा रहा हूँ। इतना-सा अभिनय तो मैं कर ही सकता हूँ। फिर भी, मैं आपका बहुत आभारी हूँ कि आपने ठीक समय पर मुझे सतर्क कर दिया। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद !"

एनरिको चला गया। मैं अपने बिस्तर पर पड़ा-पड़ा सिर पर हाथ रखे आकाश से पाताल तक की चिन्ता में डूब गया। मुझे अचानक एक बात सूझ गयी और मैंने म्यूनिख वाले दोस्त क्रोले को एक बार और टेलीफ़ोन किया। एक मिनट के अंदर ही उससे सम्पर्क हो गया।

"क्या बात है शंकु ? कोई परेशानी तो नहीं ?"

मैंने क्रोले को संक्षेप में सब कुछ बता दिया। क्रोले ने सब कुछ सुनने के बाद, मुझसे पूछा, "एनरिको अभी कल का छोकरा है। कहीं हवाई किले तो नहीं बना रहा ?"

"नहीं--नहीं," मैंने कहा, "वह जो कुछ भी कह रहा है, उसमें तनिक भी सन्देह नहीं किया जा सकता। लेकिन अगर ऐसा-वैसा कुछ हुआ भी तो मैं इस मामले को अपने तईं सँभाल लूँगा। मैंने तुम्हें इस बारे में किसी सहायता के लिए फ़ोन नहीं किया। मुझे एक जानकारी चाहिए थी।"

"क्या ?"

"पहले यह बताओ कि क्लाइव का हत्यारा अब तक पकड़ा गया या नहीं ?"

"यह सब क्यों पूछ रहे हो ?"

"इसकी वजह है।"

"नहीं। वह अब तक नहीं पकड़ा जा सका है। लेकिन जिससे उसकी हत्या की गयी, उसका एक हिस्सा उसके घर के बगीचे में, जमीन के नीचे गाड़ दिया गया था जोकि अब मिल गया है। हालाँकि उस पर किसी की उँगलियों के निशान नहीं हैं। इसलिए यह हत्या अब तक रहस्यपूर्ण घटना ही बनी हुई है।"

"यह सब किस तारीख को हुआ ?"

"तेईस अक्तूबर को। अब तुम पूछोगे कितने बजे--? है न--!"

"बता सको तो बता दो।"

"अच्छा, यह सब तुम क्यों पूछ रहे हो ?"

"अब इसे तुम मेरी जिज्ञासा कह सकते हो। एक वैज्ञानिक को अनुसंधान के लिए इतना कुछ तो जानना ही चाहिए !"

"तो फिर सुनो। क्लाइव के साथ, उस दिन रात को साढ़े सात बजे एक पत्रकार मिलने आया था। यह कार्यक्रम पहले से ही तय था। वह ठीक साढ़े सात बजे आया और आठ बजे के पहले चला गया। और इसके कुछ देर के बाद ही वहाँ क्लाइव नहीं, उसकी लाश पड़ी थी। पुलिस के डाक्टर के अनुसार, यह हत्या रात के सात बजे से आठ बजे के बीच हुई थी।"

"बहुत-बहुत धन्यवाद।"

"लेकिन तुम बड़ी सावधानी से रहना। और बेकार की किसी परेशानी में खुद को डालने की कोशिश भी नहीं करना। और अगर मौक़ा मिले तो उधर म्यूनिख का भी एक चक्कर लगा जाना।"

"जरूर, अगर जिन्दा रहा--।" फोन रखने के बाद मैं काफी देर तक फिर सोचता-विचारता रहा।

इस समय रात के पौने दस बजे थे। रोनदी यह बता कर गया था कि वह ग्यारह बजे लौटेगा। मेरे दिमाग़ में पता नहीं, कब से वही एक योजना उमड़-घुमड़ रही थी और मैं यह चाहता था कि इस बीच जल्दी से उसे पूरा कर लूँ। लेकिन यह अकेले मेरे बस की बात न थी, इसमें एनरिको की सहायता की भी ज़रूरत थी। मुझे पता था, वह इसी कोठी में कहीं रहता है, पहली मंज़िल पर।

मैं तेजी से नीचे उतरा। वह अपने कमरे में ही था। मैंने बताया, "माफ करना भाई तुम्हें एक बार वह मशीन वाला कमरा खोलना पड़ेगा। मुझे अचानक एक यात्रा पर जाना है। अभी--तुरंत।"

मैंने जैसा अनुरोध किया था, ठीक वैसा ही परिणाम मिला। एनरिको के तार वाला जादू सचमुच बड़ा ही दिलचस्प था। ताला बड़ी आसानी से खुल गया, मानो वह तार की तीली से नहीं, ताली से खुला हो। एनरिको को अपने पास रखने की जरूरत थी क्योंकि अगर मशीन चालू हो गयी और अतीत की



'एनरिको के तारवाला जादू सचमुच बड़ा ही दिलचस्प था। ताला बड़ी आसानी से खुल गया।'

यात्रा करते हुए अचानक कोई संकट पैदा हो गया तो वह मुझे वर्तमान में लौटा ले आयेगा।

"आप किस ओर सफर करेंगे, भूत की या भविष्य की ?" एनरिको ने पूछा।

"अभी तो अतीत की।" मैंने कहा। दिन तेईस अक्टूबर--रात साढ़े सात बजे--पच्चीस और सैंतीस--अक्षांश और--संभावित स्थान--" मैंने भौगोलिक स्थिति का संकेत दिया। मेरे सामने ही दीवार पर पश्चिमी गोलार्द्ध का बड़ा-सा मानचित्र टँगा था और उसे देखते हुए मैंने एनरिको को कोलोन शहर का अक्षांश और देशान्तर बता दिया इसके बाद मेरे प्लास्टिक वाले केबिन में घुसते ही, एनरिको ने बटन दबा दिया।

दो या तीन क्षणों में मैं कोलोन शहर के एक भीड़भाड़ भरे चौक के सामने खड़ा था और फिर अपनी

इच्छा के अनुसार, मैं क्लाइव के घर के दरवाज़े के सामने उपस्थित हो गया। मुझे लगा कि यहीं कहीं इंतज़ार करना बेहतर होगा। पाँच मिनट के अंदर ही, उस पत्रकार को यहाँ पहुँच जाना चाहिए। आकाश में अब भी थोड़ी-बहुत उजास थी। क्लाइव के घर के सामने ही एक बगीचा था। इसे बहुत बड़ा नहीं कहा जा सकता। वैसे उसका घर बड़ा ही प्यारा और सजा-सँवरा था। घर के अंदर से किसी महिला का स्वर सुन पड़ा--वह किसी का नाम लेकर पुकार रही थी। क्लाइव की उम्र चालीस के आसपास होगी। वह अपने पीछे अपनी विधवा स्त्री और दो बच्चे छोड़ गया है। यह मैंने अखबार में पढ़ा था।

ठीक पाँच मिनट के बाद, मैंने किसी गाड़ी की आवाज़ सुनी। कत्थई रंग की एक मर्सीडीज़ टैक्सी घर के सामने आ खड़ी हुई। उससे एक मँझोले क़द के सज्जन उतरे। गफ्फेदार दाढ़ी और घनी मूँछें। गहरे नीले रंग की सूट और उसके ऊपर ओवरकोट। सिर पर तिरछी हैट और दायें हाथ में ब्रीफकेस।

टैक्सी का भाड़ा चुकाने के बाद, वह सज्जन घर के दरवाज़े के सामने आ खड़े हुए और उन्होंने घंटी बजायी। इसके साथ ही, घर के नौकर ने दरवाज़ा खोल दिया।

"प्रोफेसर घर पर ही हैं न !, आने वाले ने पूछा। उसने अपनी जेब से अपना 'विजिटिंग कार्ड' निकाला और उसे आगे बढ़ाते हुए कहा, "मैंने उनसे टेलीफ़ोन पर समय ले लिया था।"

इस आगन्तुक का स्वर वैसे तो थोड़ा उखड़ा-उखड़ा-सा था लेकिन मुझे लगा कि यह आवाज़ तो मैं पहले भी कहीं सुन चुका हूँ।

नौकर कार्ड लेकर अंदर गया और थोड़ी ही देर में उल्टे पाँव आकर आगन्तुक को घर के अन्दर लिवा गया। उसके पीछे-पीछे मैं भी गया।

दरवाज़े से अंदर घुसते ही हालनुमा एक बड़ा-सा कमरा था। बायीं तरफ, ऊपरी मंजिल की ओर जाने वाली सीढ़ियाँ थीं और उसके पास ही नीचे एक 'हैटस्टैंड' रखा था। आगन्तुक ने ओवरकोट उतारकर नौकर को थमाया और हैट को हैटस्टैण्ड पर टाँगकर, दीवार पर लगे आईने में, अपनी सूरत को निहारा। फिर नौकर के बताने के मुताबिक, उसके साथ-साथ हाल के पिछले दरवाज़े से एक दूसरे कमरे में जा पहुँचा। और इन दोनों के पीछे-पीछे मैं भी। अदृश्य रूप से उपस्थित होते हुए भी मैं सब कुछ देख पा रहा था और यह मेरे लिए बड़ा ही रोमांचक अनुभव था।

यह कमरा क्लाइव के लिखने-पढ़ने का या निजी कामों से सम्बन्धित था। एक बड़ी-सी मेज़ के उस पार क्लाइव चमड़े से मढ़ी एक शानदार कुर्सी पर बैठा था।

आगन्तुक को देखते ही, वह उठ खड़ा हुआ और उसने आगे बढ़कर उससे हाथ मिलाया। लम्बा, इकहरा, सौम्य चेहरा, सिर पर सुनहले बाल, होंठों के ऊपर पतली सुनहरी मूँछें और आँखों पर सुनहरे फ्रेम का चश्मा। क्लाइव ने आगंतुक को मेज़ से लगी कुर्सी पर बैठने का आग्रह किया। मैं कमरे के बन्द दरवाज़े से टिका खड़ा रहा। मेरी आँखों के सामने एक हल्का, झीना-सा पर्दा था जैसे। मैंने देखा कि

आगन्तुक ने अपनी जेब से सिगरेट का एक पैकेट निकाला और क्लाइव की ओर बढ़ाया। क्लाइव ने बड़ी सौजन्यता से मना कर दिया। तब आगन्तुक ने एक सिगरेट निकालकर अपने होंठों से लगाया और क्लाइव के सामने पड़ी एक ट्रे में रखी एक रुपहली लाइटर से अपनी सिगरेट सुलगायी और पैकेट को जेब में डाल लिया। इसके बाद जर्मन भाषा में ही सवाल-जवाब होते रहे, जो क्लाइव की टाइम मशीन से ही जुड़े थे।

वहाँ मुझे सर्दी या गर्मी का अनुभव नहीं हो रहा था लेकिन उन दोनों को बार-बार अपनी हथेलियाँ रगड़ते देखकर मुझे लगा कि उन्हें काफ़ी सर्दी लग रही है। कमरे में, पास ही फायरप्लेस में आग जल रही थी--उसकी आँच को तेज़ करने के लिए क्लाइव अपनी कुर्सी से उठ खड़ा हुआ। उसकी पीठ अब भी क्लाइव की तरफ़ थी। इस मौक़े का फ़ायदा उठाते हुए आगन्तुक ने कोट की आस्तीन में से लोहे की छड़ निकाल कर क्लाइव के झुके हुए सिर पर दे मारा। क्लाइव लड़खड़ाया और फिर उसकी बेजान-सी देह नीचे ज़मीन पर लुढ़क गयी। इसके बाद आगन्तुक ने तिपाई पर सजी तीन छोटी-छोटी मूर्तियों को उठाकर ब्रीफकेस में रख लिया। इतना सब कुछ पलक झपकते हो गया।

ठीक इसी समय बाहर किसी के पाँव की आहट सुनायी पड़ी। आगंतुक की नज़र बन्द दरवाज़े की ओर लगी थी और उसके चेहरे का रंग फक हो गया था। लेकिन क़दमों की आहट कुछ देर बाद ग़ायब हो गयी। कमरे से बाहर निकलने का यही अच्छा मौक़ा था। उसने अपना खूनी हथियार फिर अपनी आस्तीन में छुपा लिया।

इस हत्यारे के पीछे-पीछे मैं भी लौटा।

इस कमरे से बाहर, हालनुमा बड़े कमरे में नौकर हाथ में ओवरकोट लिए दीख पड़ा। आगन्तुक ने उसे पहन लिया और बाहरी दरवाज़े की ओर बढ़ चला।

बाहर काफी अंधेरा था। इस अंधेरे को तेजी से चीरते हुए, इस हत्यारे ने सामने वाले बगीचे के एक कोने में उस जानलेवा छड़ को मिट्टी में दबा दिया। और बगीचे का फाटक पार कर निकल गया--मुझे यह लग रहा था कि यह यात्रा अभी यहीं खत्म होनी है।

"प्रोफेसर रोनदी की गाड़ी की आवाज़--" एनारिको ने दबी ज़ुबान से कहा।

हम दोनों इस मशीन वाले कमरे से बाहर निकल आये। जल्दी-जल्दी और पूरी सावधानी के साथ। एनरिको ने लोहे के तार से दरवाज़े को अच्छी तरह बंद कर दिया। बाहर कार के दरवाज़े के खुलने और फिर बन्द होने की आवाज़ सुन पड़ी। एक मिनट के अंदर ही मैं अपने कमरे में आ चुका था।

मैं इतना तो समझ ही गया कि क्लाइव का हत्यारा और कोई नहीं, खुद प्रो. रोनदी था। लेकिन यह सब जानकर मुझे क्या मिलना था ? वही हत्यारा है. इसका सबूत भला मैं कहाँ से जुटा पाता और



'क्लाइव उठा और आग...को उकसा देने के लिए फायर प्लेस तक पहुँचा।'

वह भी हत्या के इतने दिनों के बाद ! बहुत सोच-विचार करने पर भी मैं किसी नतीजे पर नहीं पहुँच सका और न ही कुछ तय कर सका।

फिर नीचे आना पड़ा। रोनदी के नौकर कार्लो ने आकर बताया कि वह टाइम मशीन वाले कमरे में मेरी प्रतीक्षा कर रहा है।

22 नवम्बर

आज मैं अपने देश लौट आया। किसी तरह जान बचाकर अपने देश लौट सका, यह मेरे लिए बड़े सौभाग्य की बात है। लेकिन सारी घटना को अच्छी तरह समझाकर बताना होगा। पिछले दो दिनों की उत्तेजना, चिंता और बेचैनी के कारण बड़ा परेशान रहा, इसलिए डायरी लिख पाने का सवाल ही नहीं पैदा होता।

उस दिन रोनदी के नीचे बुलाने पर मैं बड़ी अनिच्छा से नीचे उतरा। रोनदी मुझे अपनी तीखी निगाहों से घूर रहा था। वह यह भी समझ गया कि किस कारण मैं परेशान दीख रहा हूँ। उसने इसका कारण पूछा तो मुझे झूठ-मूठ ही यह बताना पड़ा कि मेरी दवा ठीक से काम नहीं कर पा रही है और मैं बड़ी कमज़ोरी महसूस कर रहा हूँ।

मैं नहीं जानता मैंने ठीक देखा या ग़लत लेकिन रोनदी की आँखें जैसे चमक उठीं। उसने कहा, "मेरे पास एक इतालवी दवा है, आप लेना चाहेंगे।"

मैं नहीं चाहता था कि रोनदी को मुझ पर कोई सन्देह हो इसलिए मैंने कहा, "हाँ, ले सकता हूँ।" मुझे यह पता था कि अगर यह दवा टिकिया की शक्ल में हुई तो इसे मुझे पानी के साथ निगलना पड़ेगा और उस पानी में वह ज़हर मिलाना छोड़ेगा नहीं। लेकिन जितने दिनों तक मैं अपनी दवा 'मिरेक्युरल' खाता रहूँगा, कोई ऊपरी दवा मुझ पर कोई बुरा असर नहीं करेगी। मुझे यह भी पता था कि एनरिको की उपस्थिति में रोनदी एकदम आमने-सामने मेरी हत्या पर उतारू नहीं होगा। वह मुझे तिल-तिल कर मारेगा, ज़हर भी देगा तो थोड़ी-थोड़ी। वह चाहे जो करे और उसने जैसा भी जाल बिछाया हो, मैं उसमें फँस चुका हूँ, उसे मैं यही बताना और जताना चाहता था। और इसीलिए मुझे अपनी अस्वस्थता जताने का यह नाटक रचना पड़ा।

अस्वस्थता के चलते आज टाइम मशीन का रोमांचक खेल यहीं बंद कर देना पड़ा। रोनदी ने दवा ला दी। टिकिया ही थी। उसने अपने हाथ से पानी का गिलास भी आगे बढ़ाया। उसके सामने ही मैं टिकिया के पानी समेत गटक गया। आधे घंटे के बाद, मैंने 'मिरेक्युरल' का भी सेवन किया।

लेकिन इस तरह यहाँ और कितने दिन काट पाता भला !

और जब मुझे इस बात का जीता-जागता सबूत मिल ही चुका था कि रोनदी ही क्लाइव का हत्यारा है तो मेरे मन में बराबर यही उथल-पुथल मची रही कि क्या हत्यारे को सज़ा दिलवाये बिना ही मुझे भारत लौटना पड़ेगा ?

बहुत सोच-विचार करने के बाद भी, मुझे कोई रास्ता नहीं दीख पड़ा।

दूसरे दिन लंच के समय रोनदी ने मुझसे पूछा--"अब आप कैसे हैं ?"

"पहले से बेहतर हूँ" मैंने बताया, "लेकिन मैं ज्यादा कुछ खाऊँगा नहीं--प्लीज़।"

कहते-कहते एनरिको के साथ मेरी आँखें लड़ीं। वह मेरी बगल में ही बैठा था। खाना खाते-खाते ही, उसने बड़ी चतुराई से मेरे दायें हाथ में एक छोटी-सी पर्ची थमा दी। खाने-पीने के बाद, मैंने अपने कमरे में आकर वह पर्ची खोली। लिखा था, "आज दोपहर बाद, किसी समय मैं आपसे भेंट करूँगा।"

जैसा कि एनरिको ने लिखा था लगभग ढाई बजे वह मेरे कमरे में आ गया। उसने कहा, "उस समय अचानक रोनदी आ गया इसलिए मैं कल रात वाली कोलोन-यात्रा के बारे में आपसे कुछ जान न पाया।"

"आप यहाँ मेरे पास आये हैं, इस बारे में प्रो. रोनदी को पता चल गया तो ?"

"रोनदी की यह पुरानी आदत है कि दोपहर के भोजन के बाद वह डेढ़-दो घंटे तक सोया करता है। आपने इटली की 'सियेस्ता' के बारे में नहीं सुना ? यहाँ के लोग दोपहर में थोड़ी देर तक सोये बिना रह नहीं सकते।"

मैंने एनरिको को अपने कोलोन-सफर के बारे में विस्तार से बताया। मैंने यह भी कहा कि प्रोफेसर रोनदी ही क्लाइव का कातिल है। और इस सच्चाई में मुझे कोई सन्देह नहीं। हालाँकि उसने अपना वेश बदल लिया था लेकिन गले की आवाज़, चालढाल और तेवर से उसे अच्छी तरह पहचाना जा सकता था। अब सवाल यह है कि कैसे यह आरोप उस पर लगाया जाये ? सबूत कहाँ हैं ?"

एनरिको ने बताया, "रोनदी ने पिछले महीने ही, मुझे यह बताया था कि वह रोम जा रहा है, जबकि वहाँ गया नहीं। मुझे अपने एक रोम-वासी दोस्त से यह खबर मिली। इसका सीधा मतलब यह हुआ कि वह रोम नहीं, कोलोन गया था। लेकिन इसके बावजूद मुझे यह लग रहा है कि इस बात में कोई खास दम है।"

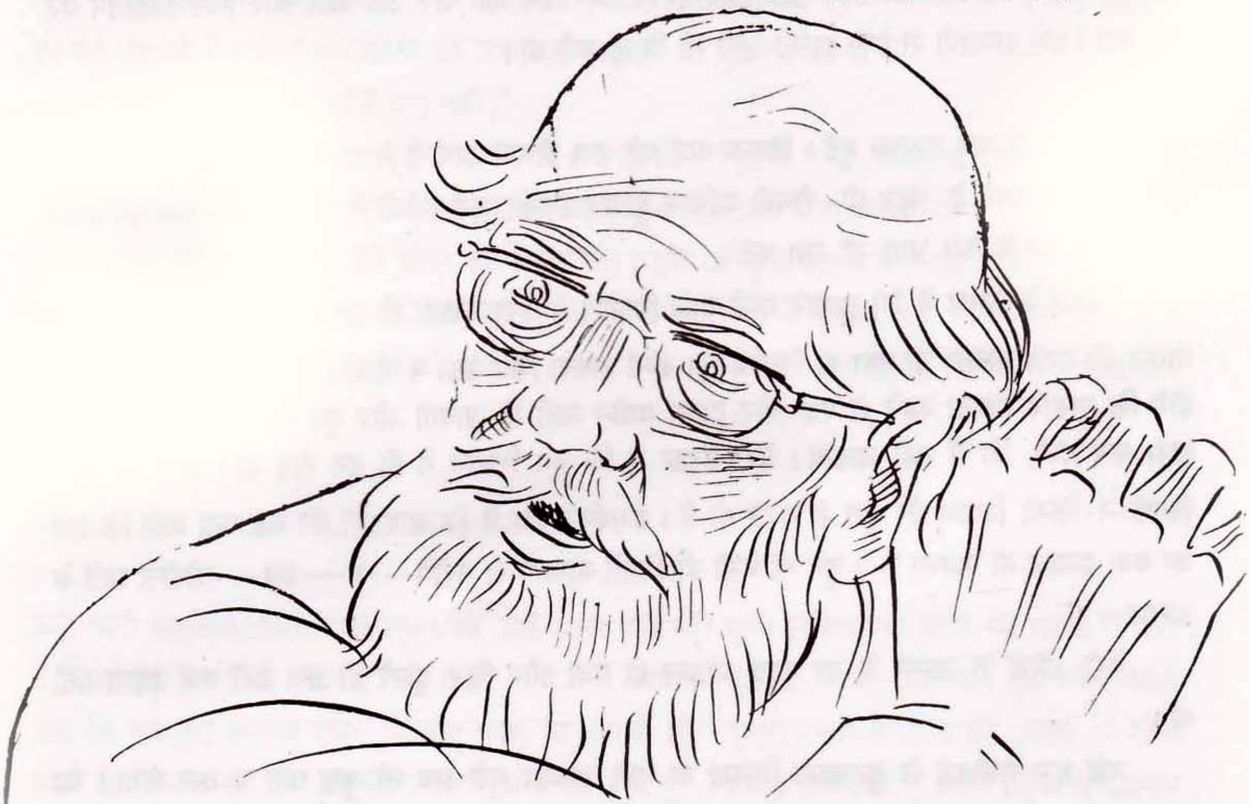
मैं एनरिको को एक बात बताये बिना न रह सका। वही ज्योतिषी वाली बात। मैंने कहा, "मेरे एक

मित्र हैं, अलौकिक शक्ति सम्पन्न। उन्होंने मुझे बताया था कि इक्कीस नवम्बर की रात मेरे साथ कोई दुर्घटना घटेगी। मैं इस मुसीबत से उबर पाऊंगा या नहीं, यह तो वह नहीं बता सके। जबकि मैं यह जानना चाह रहा था कि आखिर यह दुर्घटना घटेगी कैसे ?"

"इस बारे में आप टाइम मशीन की मदद क्यों नहीं लेते ?"

"ठीक कहा तुमने ?"

"तो फिर जल्दी चलिए। हमारे पास अभी भी पैंतीस-चालीस मिनट हैं। देर न कीजिए।"



'बस, इतनी देर में मेरा काम हो जायेगा।'

हम दोनों फिर एक बार मशीन वाले कमरे में हाजिर हो गये। एनरिको ने फिर टोका, "मैं आपको दस मिनट से अधिक समय दे न पाऊँगा।"

"इतनी देर में मेरा काम हो जायगा", कहते हुए, मैं आश्वस्त था।

मैं प्लास्टिक के पिंजरे में जाकर खड़ा हो गया। दस सेकेण्ड के अन्दर ही मैंने अपने को मिलान के सुप्रसिद्ध गिरजाघर के पास खड़ा पाया। अपनी इच्छाशक्ति के ज़ोर से मैं फिर रोनदी की आलीशान कोठी में, अपने कमरे के बिस्तर पर पड़ा पाया। लेकिन तभी एक अद्भुत दृश्य मेरी आँखों के सामने तिर

आया और मैं तो जैसे जमकर रह गया।

मैंने पाया मैं, यानी कि प्रो. त्रिलोकेश्वर शंकु, अपने बिस्तर पर सोया पड़ा हूँ, अचेत-सा। मैं यह भी समझ गया कि मैं बुरी तरह अस्वस्थ हूँ। सारे कमरे में मेरे सामान बिखरे पड़े हैं। ऐसा लगता था कि यहाँ अभी-अभी शिव का ताण्डव नृत्य हुआ था। ऐसा क्यों कर लगा, मैं कुछ समझ न पाया।

मुझे अपनी इस हालत पर बड़ा तरस आया लेकिन मैं कुछ कर पाने की स्थिति में नहीं था। बिस्तर पर ही करवट बदलता रहा और छटपटाता रहा। घबराकर एक बार उठ बैठा और फिर बिछावन पर लेट गया। इस लाचारी से मेरी हालत और भी बिगड़ गयी थी।

अचानक दरवाज़े पर दस्तक हुई। बिस्तर पर पड़े इस बीमार आदमी ने दरवाज़े की ओर ताका और दूसरे ही क्षण कमरे के अंदर प्रो. रोनदी दाखिल हुआ। उसकी सुर्ख आँखों में निर्मम हत्या-भाव को देखते ही मेरे तन-मन में जैसे आग-सी लग गयी।

"आज के डिनर में मैंने तुम्हारे पानी वाले गिलास में ज़रा ज़्यादा ही जहर घोल दिया था," रोनदी पागल की तरह बकता जा रहा था "ताकि तुम कभी अपना सिर उठा न पाओ। यह तो तुम समझ ही गये होगे कि तुम्हारे जिन्दा रहने से एक और टाइम मशीन खड़ी हो जायगी और तुम मेरे कारोबार में बखेड़ा खड़ा कर दोगे, जो मैं नहीं चाहता। मेरी इच्छा है कि तुम मिलान में ही दम तोड़ दो। अभी भी लोग किसी-न-किसी विषाणु की छूत से मरते ही हैं। इसकी वजह है कि डाक्टरों को यह पता नहीं कि इस का क्या इलाज हो सकता है ? तुम भी ऐसी ही किसी बीमारी से मरोगे---च---च्च---चौबीस घंटों के अन्दर-- ।"

मेरी आँखों के सामने से यह दृश्य ओझल हो गया और फिर दूसरे ही क्षण वहाँ एक काला पर्दा था।

मुझे इस मुसीबत से छुटकारा मिलेगा या नहीं, इसका मुझे अब भी कुछ पता न चल पाया। यह दुश्चिंता बिजली की तरह कौंधी और वह मेरे दिमाग़ पर जा गिरी। मैं बुरी तरह विचलित हो उठा और मेरे हाथ-पाँव काँपने लगे।

"क्या हुआ प्रो. शंकु ?" एनरिको ने पूछा।

मैंने अपने को किसी तरह सँभालते हुए कहा, "मेरे दिमाग़ में एक बात आयी है। और मुझे दो काम करने हैं। पहला है, मेरे म्यूनिख वाले मित्र क्रोले से फ़ोन पर बातचीत।"

"और दूसरा ?" एनरिको उत्साहित हो उठा था।

"यह दूसरा काम आपके जिम्मे रहेगा। वैसे यह साहस और जोखिम भरा काम है। और मुझे आशा है, आप इसे जरूर पूरा करेंगे।"

"कौन-सा काम, जल्दी बताइये।"

मैंने रोनदी के अध्ययन-कक्ष में यह देखा है कि उसके पास पाइपों का बड़ा अच्छा संग्रह है। उसकी कुर्सी के पीछे ही, शीशे वाली तिपाई में। उसमें बीस-बाइस पाइपें रखी हैं, एक से बढ़कर एक। मैंने एनिरको से पूछा, "इनमें से सिर्फ एक पाइप चाहिए, पुलिस की छानबीन के लिए। ताकि उँगलियों के निशान की पहचान की जा सके। हो पायेगा यह काम ?"

"यह तो बड़ा आसान काम है।" एनरिको ने आगे बताया, "यहाँ की पुलिस फोर्स में मेरी पहचान का एक आदमी है। कभी इस कोठी की हिफ़ाजत का भार भी मुझ पर ही था।"

"फिर तो चिन्ता की कोई बात नहीं।"

हम दोनों अपने-अपने कमरों में चले गये। एनरिको ने मुझसे वादा किया था कि शाम ढलने के पहले ही वह रोनदी की कोई एक पाइप उड़ाकर सीधे पुलिस स्टेशन चला जायेगा।

अपने कमरे में आकर मैंने क्रोले को फोन किया। उसे जो कुछ बताना था, बता दिया। मुझे उसकी सहायता की बड़ी जरूरत थी। क्योंकि बिना इसके मैं अपने इरादे में सफल नहीं हो सकता था। और क्रोले ने मुझे पूरी तरह भरोसा दिलाते हुए कहा कि उससे जो भी मदद बन पड़ेगी, वह करने में पीछे नहीं हटेगा।

यह सब घटना परसों की है, यानी बीस नवम्बर की।

कल यानी इक्कीस नवम्बर की सुबह को कोई खास बात नहीं हुई। लेकिन एक छोटी-सी घटना के बारे में लिखा जा सकता है। रोनदी मेरी सेहत के बारे में लगातार पूछताछ करता रहा था। मुझे ऐसा लगता रहा कि वह मुझे बराबर जहर पिलाता चला जा रहा है और दूसरी तरफ मैं भी उसके असर को ख़त्म करने के लिए अपनी दवा का सेवन करता चला जा रहा हूँ। 'विषस्य विषमौषधम्' वाली उक्ति पर अमल करता हुआ। विष के प्रभाव से अपने को मुक्त कर मैं पूरी तरह स्वस्थ-प्रसन्न था। हाँ, दुर्बलता का नाटक मुझे अवश्य करते रहना पड़ा था।

इस नाटक के बारे में रोनदी के मन में कोई सन्देह था या नहीं, मैं ठीक-ठीक कह नहीं सकता। वैसे मुझे इसकी चिन्ता अवश्य थी। लेकिन रोनदी भी मेरे साथ चालाकी कर रहा था, यह मैं ठीक से समझ नहीं पाया। कल दोपहर, लंच के बाद मैं उसकी शैतानी भरी करतूत के बारे में जान पाया था।

कल दोपहर का भोजन खाने के बाद, जब मैं अपने कमरे में वापस आया तो मैंने 'मिरेक्युरल' लेना चाहा। मैंने देखा, शीशी जिस हैंड बैग में रखी थी वह ग़ायब है।--मेरी आँखों के सामने अंधेरा-सा छा गया। अगर मैं ज़हर के असर को ख़त्म नहीं कर पाया तो मेरे लिए ज़िंदा रह पाना भी मुश्किल हो

जायेगा।

मैं किसी पागल की तरह सारे कमरे को छानता रहा और दवा की शीशी ढूँढ़ता रहा। हालाँकि मैं यह अच्छी तरह जानता था कि शीशी उसी हैंडबैग में थी। कहीं और नहीं।

मैं अपने को बड़ा असहाय पा रहा था और हारकर मैंने एनरिको को फ़ोन किया। वह अपने कमरे में नहीं था। मुझे यह लगता जा रहा था कि मेरी देह जैसे अकड़ती चली जा रही है। हो सकता है रोनदी ने ज़हर की ख़ूराक और भी बढ़ा दी हो ताकि कुछ ही दिनों में वह मुझे एक मांस के लोथड़े की तरह कूड़ेदान में फिंकवा सके।

हार कर मैं अपने बिछावन पर लेट गया। मेरा सारा शरीर टूटने लगा था। हाथ-पाँव बोझिल, सर में हल्का-हल्का दर्द और आँखें सुर्ख़।

मुझे पता नहीं, मैं कब सो गया। जब नींद टूटी तो शाम गहरा चुकी थी। मैंने एक बार फिर एनरिको को फ़ोन किया। वह अब तक वापस नहीं लौटा था।

मैं किसी तरह उठा। लेकिन ठीक से खड़ा न हो पाया। पाँव डगमगा रहे थे। इसलिए मैं बिछावन पर ही लेट गया। आँखें ठीक से देख नहीं पा रही थीं और सब कुछ धुँधला-धुँधला-सा दीख रहा था। क्या मेरी मौत इन्हीं सबके बीच खड़ी थी ? मेज़ के ऊपर रखी घड़ी की ओर काफी देर तक आँखें गड़ा-गड़ा कर देखने के बाद मैं रेंगती सुइयों को पढ़ पाया कि अभी रात के नौ बजे हैं।--इसका मतलब है कि अब--

हाँ, मैंने टाइम मशीन में ठीक ही देखा था। दरवाज़े पर दस्तक देते हुए रोनदी ने कमरे के अन्दर झाँका और फिर इसके बाद उसकी बकझक शुरू हो गयी। इन सारी बातों को तो मैं कल ही सुन चुका था, उसे आज फिर दोबारा सुनना पड़ा...

"आखिर दुनिया के लोग विषाणुओं की छूत से, वायरस के चलते मर रहे हैं कि नहीं--इनकी वजह डाक्टरों को नहीं मालूम !--वे इसका इलाज नहीं जानते--नहीं कर पाते। तुम भी इसी से मरोगे।--चौबीस घंटे के अंदर--मुझे पता है और इसके बाद यह प्रो. लुइज़ि रोनदी इस टाइम मशीन का अकेला सम्राट होगा। मुझे रुपयों की ज़रूरत नहीं--लेकिन रुपयों का नशा--वह तो--"

खट-खट--खट--तभी किसी ने कमरे का दरवाज़ा पीटना शुरू किया। रोनदी बुरी तरह घबरा गया। उसने अन्दर से चिटकनी चढ़ा रखी थी।

"खट--खट--खड़ाम--"

इधर रोनदी अपनी जगह पर खड़ा था। लेकिन उसके चेहरे पर हवाइयाँ उड़ रही थीं और आँखें फटी हुईं।

मैंने अपनी देह की सारी ताकत को पूरी तरह बटोरा और किसी तरह बिस्तर से उठ खड़ा हुआ फिर किसी तरह लड़खड़ाता--डगमगाता दरवाज़े की ओर बढ़ा। रोनदी मेरी राह रोके खड़ा था। मैंने उसे जोर से धक्का मारा और जी-जान लगाकर दरवाजा खोलने में सफल हो गया।

पलक झपकते कमरे के अन्दर हथियारबंद पुलिसमैन आ गये।

क्रोले और एनरिको ने सचमुच मेरे सच्चे मित्र का काम किया था। उस दिन टाइम मशीन की सहायता से मैं क्लाइव के घर पहुँचा था, मैंने अपनी आँखों से देखा ही था कि क्लाइव की लाइटर से रोनदी ने अपनी सिगरेट सुलगायी थी। हो सकता है, उसने यह सोचा हो कि वह लाइटर अपने साथ ही लेकर चलता बनेगा। मगर जल्दबाजी में, वह ऐसा करना भूल गया। मैंने भी इस बात पर विशेष ध्यान नहीं दिया था। मुझे जब इस बात की याद आयी तो मैंने क्रोले को इस बारे में बता दिया था कि लाइट पर हत्यारे की उँगलियों के निशान जरूर मिल जायेंगे। और उस निशान को रोनदी की पाइप के साथ मिलाकर देखा जा सकेगा।

और अंत में यही सब हुआ।

मेरी दवा 'मिरेक्युरल' रोनदी के कमरे में ही मिली। मेरी हालत इसकी एक खूराक के बाद ही ठीक होने लगी और पूरी तरह ठीक होने में चार घण्टे लग गये।